Department of Economics

L.N.D. COLLEGE, MOTIHARI (BIHAR)

(a constitueant unit of B.R.A. University, Muzaffarpur (Bihar)

NAAC Accredited 'B+'

Topic : अर्थशास्त्र की परिभाषा (Definitions of Economics)

BA Economics Part I MJC/MIC/MDC (Semester I)

Instructor

Dr. Ram Prawesh

Guest Faculty (Department of Economics)

L.N.D. COLLEGE, MOTIHARI (BIHAR)

अर्थशास्त्र की परिभाषा (Definitions of Economics)

अर्थशास्त्र की विषय-सामग्री एवं परिभाषा को लेकर अर्थशास्त्रीगण एकमत नहीं हैं। विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने अर्थशास्त्र के अभिप्राय को भिन्न-भिन्न रूपों में परिभाषित किया है। अर्थशास्त्र की परिभाषाओं की विविधता को देखते हुए जे. एम. कीन्स ने यह मत व्यक्त किया है कि "राज्य अर्थव्यवस्था ने परिभाषाओं से अपना गला घोंट लिया है।" अर्थशास्त्रियों के वैचारिक मतभेद के कारण ही श्रीमती बारबरा बूटन ने कहा है कि "जब कभी छः अर्थशास्त्री मिलते हैं, तब वहाँ सात विचार उत्पन्न होते हैं। " अर्थशास्त्रियों के एकमत न होने के कारण यद्यपि अर्थशास्त्र की एक सर्वमान्य परिभाषा नहीं दी जा सकती, फिर भी सुविधा की दृष्टि से विभिन्न परिभाषाओं को निम्नलिखित चार वर्गों में रखकर अध्ययन किया जा सकता है-

1. धन सम्बन्धी परिभाषाएँ (Definitions Related to Wealth) - एडम स्मिथ, जे. बी. से., बाकर, सीनियर आदि द्वारा प्रतिपादित ।

2. कल्याण सम्बन्धी परिभाषाएँ (Definitions Related to Welfare) - मार्शल, पीगू, कैन्स आदि द्वारा प्रतिपादित ।

3. वैज्ञानिक परिभाषाएँ (Scientific Definitions) अथवा दुर्लभता सम्बन्धी परिभाषाएँ (Definitions Related to Scarcity) - रॉबिन्स, विकस्टीड, स्टिगलर आदि द्वारा प्रतिपादित ।

4. विकास सम्बन्धी परिभाषाएँ (Definitions Related to Growth) - सैम्युलसन द्वारा प्रतिपादित ।

5. अन्य परिभाषाएँ (Other Definitions) - प्रो. जे. के. मेहता, बेन्हम, हेनरी स्मिथ आदि द्वारा प्रतिपादित ।

धन सम्बन्धी परिभाषाएँ (DEFINITIONS RELATED TO WEALTH)

इस वर्ग की सभी परिभाषाओं में अर्थशास्त्र को' धन का शास्त्र' (Science of Wealth) कहकर पुकारा गया। इस विचारधारा के जनक एडम स्मिथ थे जिनके अनुसार, "अर्थशास्त्र का सम्बन्ध राष्ट्रों के धन की प्रकृति एवं उसके कारणों की जाँच करने से है। " एडम स्मिथ के इस विचार का समर्थन वाकर, सीनियर एवं जे. बी. से जैसे अर्थशास्त्रियों ने भी किया है। वाकर (Walker) के शब्दों में, "अर्थशास्त्र ज्ञान की शाखा है जो धन से सम्बन्धित है। " सीनियर (Senior) के अनुसार, "राजनीतिक अर्थशास्त्र की सामग्री सुख नहीं बल्कि धन है। जे. बी. से (J. B. Say) के अनुसार, "अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो धन का अध्ययन करता है।

कल्याण सम्बन्धी परिभाषाएँ (DEFINITIONS RELATED TO WELFARE)

प्रो. मार्शल ने अपनी पुस्तक 'Principles of Economics' में एडम स्मिथ एवं उनके समकालीन अर्थशास्त्रियों की इस विचारधारा को बदल दिया कि धन व्यक्ति का साध्य है। मार्शल ने इस तथ्य पर बल दिया कि अर्थशास्त्र का अध्ययन विषय धनोपार्जन नहीं बल्कि मानव-कल्याण है। मार्शल के अनुसार, धन साधन है, साध्य नहीं। इस प्रकार मार्शल एवं उसके समकालीन अर्थशास्त्रियों द्वारा अर्थशास्त्र के अध्ययन के इस चरण में धन के स्थान

पर मानव-कल्याण के विचार की स्थापना की गई। मार्शल के विचार का समर्थन पीगू, कैनन, मिल, फिशर आदि अर्थशास्त्रियों ने किया। इन सभी अर्थशास्त्रियों ने धनोपार्जन के स्थान पर मानव-कल्याण को वरीयता दी।

मार्शल के अनुसार, "अर्थशास्त्र जीवन के साधारण व्यवसाय के सम्बन्ध में मानव जाति का अध्ययन है। यह व्यक्तिगत तथा सामाजिक कार्यों के उस भाग की जाँच करता है जो भौतिक सुख के साधनों तथा सामाजिक उपयोग के साथ - अति घनिष्ठता के साथ जुड़ा हुआ है। इस प्रकार एक ओर यह धन का अध्ययन है तथा दूसरी ओर अधिक महत्वपूर्ण दिशा में यह मनुष्य के अध्ययन का एक भाग है। "

अर्थशास्त्र की वैज्ञानिक परिभाषाएँ (SCIENTIFIC DEFINITIONS OF ECONOMICS) अथवा दुर्लभता सम्बन्धी परिभाषाएँ (DEFINITIONS RELATED TO SCARCITY)

दुर्लभता सम्बन्धी परिभाषा को प्रतिपादित करने का श्रेय लन्दन स्कूल के प्रो. रॉबिन्स को है। रॉबिन्स ने आर्थिक तथा अनार्थिक क्रियाओं के विभेद को अस्वीकार करते हुए यह विचार व्यक्त किया कि जैसे ही मनुष्य के साधन उसके लक्ष्यों की तुलना में कम पड़ जाते हैं, आर्थिक समस्या तुरन्त उत्पन्न हो जाती है जिसमें मनुष्य असीमित लक्ष्यों का सीमित साधनों से सम्बन्ध स्थापित करने के लिए प्रयत्न करता है। यह मानव व्यवहार की एक सर्वव्यापी सामान्य दशा है जो कि समय की हर परिस्थिति में उत्पन्न होती रहती है। रॉबिन्स के शब्दों में, "अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो कि लक्ष्यों एवं वैकल्पिक उपयोगों वाले सीमित साधनों के परस्पर सम्बन्धों के रूप में मानव व्यवहार का अध्ययन करता है। "

विकास सम्बन्धी परिभाषाएँ (DEFINITIONS RELATED TO GROWTH)

अर्थशास्त्र की 'दुर्लभता' दृष्टिकोण सम्बन्धी परिभाषाओं पर एक महत्वपूर्ण सुधार प्रो. सैम्युलसन द्वारा किया गया है। उनके अनुसार, "अर्थशास्त्र इस बात का अध्ययन करता है कि व्यक्ति तथा समाज, मौद्रिक अर्थव्यवस्था अथवा विनिमय प्रणाली में, विभिन्न वस्तुओं के समयागत उत्पादन के लिए सीमित उत्पादक संसाधनों के उपयोग का किस प्रकार चुनाव करते हैं और समाज के विभिन्न लोगों तथा समूहों के बीच, उनके वर्तमान तथा भविष्य में उपयोग के लिए किस प्रकार वितरण करते हैं।"

प्रो. सैम्युलसन द्वारा दी गई परिभाषा की प्रमुख विशेषता यह है कि उन्होंने विकासवादी दृष्टिकोण अपनाकर उसे स्थैतिक (Static) के स्थान पर गतिशील (Dynamic) बनाने का सफल प्रयास किया है। सैम्युलसन ने इस बात को समान महत्व दिया है कि अर्थव्यवस्था चाहे मौद्रिक हो अथवा अदल-बदल की सीधी प्रणाली, चुनाव की समस्या दोनों ही परिस्थितियों में उत्पन्न होती है। इसी प्रकार समय तत्व को आधार बनाकर सैम्युलसन के अनुसार स्वरूप परिवर्तनशील होता है। इस प्रकार उपर्युक्त परिभाषा व्यापक रूप से उपयोगी है।

अन्य परिभाषाएँ (OTHER DEFINITIONS)

प्रो. जे. के. मेहता की परिभाषा (Prof. J. K. Mehta's Definition)

अर्थशास्त्र की परिभाषा देने में प्रो. मेहता ने गाँधीवादी दृष्टिकोण-सादा जीवन उच्च विचार (Simple Living and High Thinking) को आधार बनाया है। उन्होंने मानव जीवन का अन्तिम लक्ष्य सुख को माना है। भारतीय दर्शन व संस्कृति के अनुरूप प्रो. मेहता ने अर्थशास्त्र को परिभाषित किया है, "अर्थशास्त्र एक विज्ञान है जिसमें मानव के उस व्यवहार का अध्ययन किया जाता है जिससे आवश्यकता विहीनता के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। "

प्रो. मेहता का दृष्टिकोण यह है कि अर्थशास्त्र के अध्ययन का लक्ष्य आवश्यकताओं का संख्यावर्धन नहीं बल्कि उनके न्यूनतम का होना चाहिए। उन्होंने इस सम्बन्ध में मार्शल तथा रॉबिन्स के दृष्टिकोण को गलत ठहराया है। प्रो. मेहता के अनुसार अर्थशास्त्र में मानव के उन प्रयासों का अध्ययन किया जाना चाहिए जिससे परम सुख की प्राप्ति हो। यह तभी हो सकता है जबकि मानव के प्रयास आवश्यकता विहीनता (Wantless) की अवस्था तक पहुँचने के लिए किये जायें।

जे. के. मेहता की परिभाषा का सबसे बड़ा दोष उसका अव्यावहारिक होना है। इस परिभाषा को अनावश्यक रूप से भारतीय दर्शन के सिद्धान्तों पर आधारित किया गया है। यदि किसी प्रकार यह मान लिया जाये कि मेहता की परिभाषा सही है तो यह स्वयं विनाशकारी होने के कारण, अर्थशास्त्र के अध्ययन की आवश्यकता को ही समाप्त कर देती है। जब आवश्यकता विहीनता के फलस्वरूप, मानवीय आवश्यकताएँ ही समाप्त हो जायेंगी तो आर्थिक अध्ययन का आधार ही समाप्त हो जायेगा।